International Journal of Sanskrit Research 2022; 8(2): 68-70

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2022; 8(2): 68-70
© 2022 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 10-11-2021
Accepted: 15-12-2021

मयूरी झा
पी.एच.डी., शोधच्छात्रा, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
मयूरी झा
पी.एच.डी., शोधच्छात्रा, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

काव्यशास्त्र की परम्परा एवं आचार्य विश्वनाथ का साहित्यदर्पण

मयूरी झा

सारांश
काव्यशास्त्र का प्राचीन नाम अलंकार शास्त्र है। यद्यपि दण्डी के शब्दों में इसका मूल तत्त्व शोभा या सौन्दर्य कहा जा सकता है। मध्य युग तक आते-आते अलंकारशास्त्र को साहित्य शास्त्र भी कहा जाने लगा। प्रारम्भ में आचार्यों ने इस शास्त्र का नाम काव्यलंकार रखा था। शास्त्र शब्द का प्रयोग उसके साथ नहीं होता था। किसी गूढ तत्व का संशन या प्रतिपादन करने वाले ग्रंथ भी शास्त्र कहलाते है।इसी आधार पर अलंकारशास्त्र या काव्यशास्त्र में इस शब्द का प्रयोग हुया है। इस शोध प्रपत्र में काव्यशास्त्र की परम्परा एवं साहित्यदर्पण के बारे में वर्णन किया जाएगा।

कूटशब्द: काव्यशास्त्र की परम्परा, आचार्य विश्वनाथ, वैदिक वाङ्गमय

प्रस्तावना
काव्यशास्त्र का परिचय: वाणी का सुनना विशेषण तथा अर्थों को प्रकट करने के लिए काव्यशास्त्र जिस वाङ्गमय का नियमन करता है वह वैदिक वाङ्गमय से भिन्न है एवं वैदिक काल से ही काव्य अलंकार शास्त्रीय तत्वों पर विचार किया गया है। यहाँ वाणी के मर्म को समझने में सहृदयता एवं प्रतिभा की आवश्यकता है।

काव्यशास्त्र: काव्य के गूढ तत्वों का प्रतिपादन करने वाला शास्त्र काव्यशास्त्र कहलाता है।

अलंकारशास्त्र: काव्य में अलंकार प्रधान व सौन्दर्यपरक होते हैं। प्राचीन आलंकारिकों को ध्यान में रखते हुए काव्य के सौन्दर्यधायक तत्त्व भी प्रधानता के कारण इसे अलंकारशास्त्र कहा जाता है।
काव्य सौन्दर्य के विवेचक शास्त्र होने पर भी ये केवल उन प्रतिमानों का उल्लेख करते है जिसके आधार पर काव्य के सौन्दर्य की परीक्षा की जाती है।
काव्यशास्त्र की परम्परा: काव्यशास्त्र की परम्परा का प्रादुर्भाव भरतमुनि के नाट्यशास्त्र से स्वीकार किया जाता है। इस परम्परा को गति प्रदान करने वाले सर्वप्रथम आलङ्कारिक आचार्य भामह हैं। इन्होंने काव्य का लक्षण "शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्" किया है। इन्होंने नाट्यशास्त्रकार के द्वारा वर्णित दश गुणों का गुणत्रयी (माधुर्य, ओज तथा प्रसाद) में अन्तर्भाव किया है, तथा दशविध दोषों का सुन्दर विवेचन किया है।
भामह के पश्चात् दण्डी ने 'काव्यादर्श' नामक अलङ्कारशास्त्र के ग्रन्थ की रचना की। दण्डी सर्वप्रथम आचार्य हैं जिन्होंने वैदर्भी तथा गौडी रीति के पारस्परिक भेद को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया है। दण्डी के पश्चात् वामन ने 'काव्यालङ्कारसूत्र' ग्रन्थ की रचना की जिसमें काव्य की आलोचना सूत्रों में की गई है। वामन रीति सम्प्रदाय के प्रतिष्ठापक आचार्य हैं इनका कथन है 'रीतिरात्मा काव्यस्य'। उद्भट का ग्रन्थ 'काव्यालङ्कारसारसंग्रह' है। इसमें अलङ्कारों का विवेचन वैज्ञानिक ढंग से हुआ है। उद्भट ने अर्थ-भेद की कल्पना करके श्लेष के शब्द-श्लेष दो रूप प्रस्तुत किए हैं। उन्होंने अन्य अलङ्कारों के योग में श्लेष की ही प्रबलता मानी है। उन्होंने वाक्य का तीन प्रकार से अभिधा व्यापार माना है और काव्यगुणों को संघटना का धर्म माना है। भामह के मूल ग्रन्थ के अनुपलब्ध होने से उद्भट का ग्रन्थ ही अलङ्कार सम्प्रदाय का प्रतिपादक सर्वश्रेष्ठ तथा आदिम ग्रन्थ माना जाता है। उद्भट के बाद रुद्रट का नाम आता है। इनका 'काव्यालङ्कार' ग्रन्थ रस का विस्तार से वर्णन प्रस्तुत करता है। इसमें अलङ्कारों का वैज्ञानिक विभाजन तथा नवीन अलङ्कारों की उद्भावना की गई है। आनन्दवर्धन ने 'ध्वन्यालोक' में ध्वनि सम्प्रदाय की उद्भावना की है। इसमें प्रथम उद्योत में ध्वनि के विषय में प्राचीन आलङ्कारिकों के मतों का विस्तृत समीक्षण है। द्वितीय तथा तृतीय उद्योत में ध्वनि के भेद-उपभेद का तथा उसकी स्थापना का प्रामाणिक विवरण है। चतुर्थ उद्योत में ध्वनि की उपयोगिता का विचार है। आचार्य अभिनवगुप्त की साहित्यशास्त्र में प्रसिद्धि ध्वन्यालोक की टीका लोचन के कारण है ।

भरतमुनि के नाट्यशास्त्र की इनकी टीका अभिनवभारती के नाम से प्रसिद्ध है। इन ग्रन्थों में अभिनवगुप्त का पाण्डित्य, पूर्ण मनोवैज्ञानिक, अन्तरंग तथा आवर्जक है। आचार्य कुन्तक वक्रोक्ति सम्प्रदाय के उद्भावक तथा 'वक्रोक्तिजीवितम्' के लेखक हैं। वक्रोक्ति सिद्धान्त काव्यशास्त्र का निराला सिद्धान्त है। महीमभट्ट ने ध्वनि को अनुमान के द्वारा सिद्ध किया है। इन्होंने व्यञ्जना वृत्ति की ध्वनि के लिए आवश्यकता नहीं मानी है। ध्वनिग्रन्थ के खण्डन के लिए इन्होंने व्यक्तिविवेक नामक प्रौढ ग्रन्थ लिखा है, जिसमें लोचन तथा वक्रोक्तिजीवित के सिद्धान्तों का खण्डन किया है। महीमभट्ट के समान ही धनञ्जय ने भी ध्वनिवाद का विरोध किया है। ये रस की उत्पत्ति के विषय में भावकत्ववादी हैं और व्यञ्जनावाद के खण्डन कर्ता है। इनका ग्रन्थ दशरूपक नाट्यशास्त्र का सुन्दर ग्रन्थ है।

भोजराज ने 'सरस्वतीकण्ठाभरण' तथा 'शृंगारप्रकाश' की रचना की। 'शृंगारप्रकाश' में शृंगार रस का विशद विवेचन है। सरस्वतीकण्ठाभरण अलङ्कारशास्त्र का दण्डी के काव्यादर्श से प्रभावित ग्रन्थ है।

मम्मट का काव्यप्रकाश प्रसिद्ध है। इसमें ध्वनिविरोध का प्रामाणिक खण्डन हुआ है। काव्यप्रकाश में ध्वनिमार्ग का जो विवरण प्रस्तुत किया वही आदर्श माना जाने लगा और उसी का अनुगमन परवर्ती आलङ्कारिकों के द्वारा हुआ है। काव्यप्रकाश प्रस्थान ग्रन्थ के समान प्रौढ तथा मौलिक है। ध्वनिमार्ग का इससे सुन्दर विवेचन संक्षेप में मिलना कठिन है। काव्यप्रकाश पर सत्तर टीकाएँ लिखी गई है। स्वयं विश्वनाथ कविराज ने भी इसकी व्याख्या लिखी है। क्षेमेन्द्र औचित्य सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य है। इनके 'औचित्यविचारचर्चा' तथा 'कविकण्ठाभरण' अलङ्कारशास्त्र के ग्रन्थ है। रुय्यक ने काव्यप्रकाश की टीका लिखी है। इनका 'अलङ्कारसर्वस्व' महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। साहित्यदर्पणकार इनके विशेष ऋणी है। विश्वनाथ का अलङ्कार-वर्गीकरण एवं विवेचन रुय्यक से प्रभावित है। हेमचन्द्र का साहित्यशास्त्र पर 'काव्यानुशासन' नामक ग्रन्थ है। इनके दो शिष्य रामचन्द्र और गुणचन्द्र अपने ग्रन्थ नाट्यदर्पण के लिए प्रसिद्ध है। यह नाट्यशास्त्र के विषयों को संक्षेप में प्रस्तुत करता है। शारदातनय के ग्रन्थ का नाम 'भावप्रकाशन' है। यह प्रधान रूप से नाट्यशास्त्र का ग्रन्थ है। इसमें रस के सम्बन्ध में कतिपय प्राचीन आचार्यों के मत का निर्देश है और अभिनवगुप्त के मत का भी सुन्दर निरूपण है। पीयूषवर्ष जयदेव का चन्द्रलोक अलङ्कारशास्त्र का अतीव सुन्दर तथा लोकप्रिय ग्रन्थ है। इनका प्रभाव कुवलयानन्द पर व्यापक रूप से पड़ा है।

विश्वनाथ कविराज का सुप्रसिद्ध एवं लोकप्रिय ग्रन्थ साहित्यदर्पण आलोचनशास्त्र के जिज्ञासुओं के लिए नितान्त उपयोगी है। इसकी रचना काव्यप्रकाश की शैली पर हुई है किन्तु यह उतना प्रौढ ग्रन्थ नहीं है। विश्वनाथ आलङ्कारिक होने की अपेक्षा कवि अधिक थे और इसलिए सुन्दर उद्धरणों के उपन्यास से इस ग्रन्थ की रोचकता बढ़ गई है।

पण्डित बलदेव उपाध्याय विद्वतर डॉ० सत्यव्रतसिंह ने लिखा है-साहित्यदर्पण अलङ्कारशास्त्र का प्रस्थान ग्रन्थ नहीं है और न इसमें ध्वन्यालोक, काव्यप्रकाश और रसगंगाधर की प्रवाहपूर्ण, वैज्ञानिक और विचारात्मक शैली ही अपनाई गई है। साहित्यदर्पण की एक ही मौलिक विशेषता है और वह उसकी एक महत्त्वाकांक्षा है जिसका लक्ष्य काव्य साहित्य सम्बन्धि समस्त विषयों का एकत्र प्रतिपादन है। इस महत्त्वाकांक्षा में विश्वनाथ कविराज को पर्याप्त सफलता भी मिली है। वैसे इतना निश्चित है कि काव्य-साहित्य के समस्त विषय एक अलङ्कार ग्रन्थ में नहीं आ सकते।

साहित्यदर्पण कोई मौलिक अलङ्कार ग्रन्थ नहीं है क्योंकि आदि से अन्त तक इसमें प्राचीन आलङ्कारिकों की ही मान्यताओं का प्रकाशन है और प्राचीन अलङ्कार ग्रन्थों के ही उदाहरणों के उद्धरण भरे पड़े है। किन्तु तब भी सरस और सरल भाषा के द्वारा विषय प्रतिपादन की शैली जैसी इसकी है वैसी दूसरे अलङ्कार ग्रन्थों की नहीं।

डॉ० सत्यव्रत सिंह ने साहित्यदर्पण की लोकप्रियता का कारण इसकी सुबोधता को बताया है। उनका कथन है कि यदि साहित्यदर्पण न रचा गया होता तो भारत के पूर्वी प्रान्तों के संस्कृत काव्य-नाट्य-प्रेमी नाट्यशास्त्र के विषयों से अपरिचित ही रह जाते। मौलिक न होने पर भी, संग्रह प्रधान होने पर भी साहित्यदर्पण साधारण सहृदय सामाजिक के लिए वस्तुतः साहित्यदर्पण है जिसमें साहित्यशास्त्र के तत्त्व प्रतिबिम्बित है। साहित्यदर्पण से साहित्यशास्त्र के विषयों का ज्ञान प्राप्त करने के बाद इन विषयों के मौलिक ग्रन्थों का अनुशीलन लाभप्रद माना जाया करता है।

साहित्यदर्पण का परवर्ती अलङ्कारशास्त्र पर व्यापक प्रभाव पड़ा है। यह ग्रन्थ अत्यन्त लोकप्रिय हुआ है। विश्वनाथ कविराज के परवर्ती आचार्य जगन्नाथ हुए है। उनके रसगंगाधर नामक काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ का साहित्यदर्पण का व्यापक प्रभाव पड़ा है। पण्डितराज जगन्नाथ को विश्वनाथ के साहित्यदर्पण से काव्यशास्त्र के पुनरालोचन की प्रेरणा मिली है। साहित्यदर्पणकार ने काव्य-लक्षण इस प्रकार प्रस्तुत किया है-

वाक्यं रसात्मकं काव्यम्।

पण्डितराज जगन्नाथ ने इस काव्यलक्षण की समीक्षा में अपना निम्नलिखित काव्यलक्षण प्रस्तुत किया है-

रमणीयार्थप्रतिपादिकः शब्दः काव्यम्।

उन्होंने लिखा है –

"यत्तु रसवदेव काव्यम् इति साहित्यदर्पणे निर्णीतम् तन्न। वस्त्वलङ्कार प्रधानानां काव्यानामकाव्यत्वापत्तेः। न चेष्टापत्तिः महाकविसम्प्रदायस्याकुली भावप्रसङ्गात्"। (रसगंगाधर १ आनन पृष्ठ-८)

विश्वनाथ कविराज ने साहित्यदर्पण में काव्य के दो ही प्रकार माने है-(१) ध्वनिकाव्य और(२) गुणीभूतव्यङ्गय काव्य। उन्होंने मम्मट द्वारा मान्य चित्रकाव्य(अधम या अवरकाव्य) को मान्यता नहीं दी। इस सम्बन्ध में विश्वनाथ के तर्क की समीक्षा ही रसगंगाधर की चतुर्विध काव्य भेद इस प्रकार है-उत्तमोत्तम, उत्तम, मध्य तथा अधम। ये चारों काव्य-प्रकार पण्डितराज की काव्यपरिभाषा से स्वभावतः संगत है किन्तु विश्वनाथ के काव्य-लक्षण से काव्य-प्रकार का स्वरूप स्पष्ट नहीं होता। इसलिए विश्वनाथ ने चित्रकाव्य की मान्यता का खण्डन किया है।

इस प्रकार साहित्यदर्पण का परवर्ती अलङ्कारशास्त्र पर पर्याप्त प्रभाव पड़ा है और अलङ्कारशास्त्र के अन्तिम आचार्य पण्डितराज जगन्नाथ के रसगंगाधर की रचना साहित्यदर्पण के परिपेक्ष्य में हुई है। पण्डितराज को इस ग्रन्थ से प्रेरणा भी मिली है और उन्होंने इसमें विवेचित सिद्धान्तों की पर्याप्त समीक्षा भी की है। विशेष रूप से उन्होंने काव्य-लक्षण का संशोधन किया और काव्य-प्रकार को चतुर्विध रूप से विवेचित किया।

संस्कृत काव्यशास्त्र के प्रमुख आचार्यों की परम्परा में साहित्यदर्पणकार आचार्य विश्वनाथ का नाम आता है। इन्होंने अपने ग्रन्थ साहित्यदर्पण में नाट्यशास्त्रीय एवं काव्यशास्त्रीय विषयक तत्वों का अत्यन्त सरल शब्दों में प्रतिपादन किया है जिससे यह ग्रन्थ सहृदय को अत्यधिक आनन्ददायक एवं रोचक पूर्ण लगता है। ग्रन्थों में उन समस्त तत्वों का प्रतिपादन किया जाता है जो काव्य रचना में भावात्मक या अभावात्मक रूप में प्रस्तुत होते हैं। इसी परम्परा में साहित्यदर्पणकार आचार्य विश्वनाथ आते हैं जो समस्त साहित्यशास्त्र के तत्त्ववेत्ता हैं।

साहित्यदर्पणकार का परिचयः आचार्य विश्वनाथ एक अत्यन्त प्रसिद्ध विद्वान थे। ब्राह्मण परिवार में इनका जन्म हुआ था। नारायण इनके प्रपितामह थे। वे भी एक सुप्रसिद्ध विद्वान थे एवं चन्द्रशेखर इनके पिता श्री थे।[1] वह भी बहुत बड़े कवि थे। विश्वनाथ एवं उनके पिता कलिङ्ग देश के राजा के अधिकारी थे।[2] श्री चन्द्रशेखर की दो रचनाओं का उल्लेख 'पुष्पमाला'[3] एवं 'भाषार्णव' साहित्यदर्पण में वर्णित है। इन ग्रन्थों में संस्कृत, शौरसेनी, महाराष्ट्री तथा अन्य प्राकृत भाषाओं के वैशिष्ट्य का वर्णन किया गया है। पण्डित विश्वनाथ उड़िसा के रहने वाले थे। यह अष्टादश भाषाओं के विद्वान थे। इन्हें 'अष्टादशभाषाविलासिनीभुजङ्ग' कहा गया है। इसके अतिरिक्त वे आलङ्कारिक, ध्वनिप्रस्थापनपरमाचार्य, सङ्गीतविद्याधर, कलाविद्यामालतीमधुकर एवं कविराज उपाधियों से विभूषित थे। साहित्यदर्पण के अन्तिम श्लोक से यह प्रतिपादित होता है कि यह विभूषित थे।[4] साहित्यदर्पण के

[1] श्री चन्द्रशेखरमहाकविचन्द्रसूनु श्री विश्वनाथ कविराज कृतं प्रबन्धम्।
साहित्यदर्पणममुं सुधियो विलोक्य साहित्यतत्त्वमखिलं सुखमेव वित्त।। सा.द. १०/९९

[2] यदाहुःश्री कलिङ्ग भूमण्डलाखण्डलमहाराजाधिराजश्रीनरसिंहदेवसभायां धर्मदत्तं स्थगयन्तः सकलहृदयगोष्ठीगरिष्ठकविपण्डितास्मत्पितामह-श्रीमन्नारायणदासः। (का.प्र.द. की भूमिका, पृ.२१)

[3] शिरसि धृतसुरापगे स्मरारावरुणमुखेन्दुरुचिर्गिरीन्द्रपुत्री।
अथ चरणयुगानते स्वकान्ते स्मितसरसा भवतोऽस्तु भूतिहेतुः।। (साहित्यदर्पण ६.२५ की वृत्ति)

[4] इति श्रीमन्नारायण चरणारविन्दमधुव्रतसाहित्यार्णवकर्णधारध्वनिप्रस्थापनपरमाचार्य कविसूक्तिरत्नाकाराऽष्टादश-भाषावारविलासिनी

अतिरिक्त भी उन्होंने कई ग्रन्थों की रचना की जिनका उल्लेख आगे उनके कृतियों में वर्णित हैं।

आचार्य विश्वनाथ ने अनेक ग्रन्थों की रचना की जिसे यहाँ निरूपित किया गया है-

१. राघवविलास
२. कुवलयाश्वचरित
३. प्रशस्तिरत्नावली
४. प्रभावतीपरिणय
५. चन्द्रकला
६. नरसिंहविजय
७. काव्यप्रकाशदर्पण टीका
८. लक्ष्मीस्तव

इनका संक्षिप्त परिचय यहाँ देंगे।

१. राघवविलास: यह ग्रन्थ अब उपलब्ध नहीं है। यह एक संस्कृत का महाकाव्य है। इसका वर्णन तृतीय परिच्छेद के रसों के प्रसङ्ग में करुण रस के उदाहरण में मिलता है। [5]
२. कुवलयाश्वचरित: यह ग्रन्थ भी उपलब्ध नहीं होता। इसका उल्लेख भी तृतीय परिच्छेद के व्यभिचारिभाव में किया है। [6]
३. प्रशस्तिरत्नावली: इस ग्रन्थ में 16 भाषाओं का वर्णन है। यह ग्रन्थ भी अब उपलब्ध नहीं होता। [7]
४. प्रभावतीपरिणय: इसमें मुग्धानायिका, सन्ध्यङ्ग, नाट्यलक्षण का वर्णन है। विश्वनाथ पुत्र अनन्तदास ने दशम परिच्छेद में अलङ्कार के प्रसङ्ग में अपने पिता के इस ग्रन्थ का उल्लेख किया है। [8]
५. चन्द्रकला: यह एक नाटिका है। यह नाटिका प्राप्त होती है। इसमें चार अङ्क है। इसका प्रकाशन चौखम्बा संस्कृत सिरीज़ ऑफ़िस, वाराणसी से 1967 में हुआ था। [9]
६. नरसिंहविजय: इसका वर्णन साहित्यदर्पण में नहीं मिलता है। इसका उल्लेख काव्यप्रकाश की दर्पण टीका में मिलता है। [10]
७. काव्यप्रकाशदर्पण टीका-इसका उल्लेख विश्वनाथ ने द्वितीय परिच्छेद के लक्षणाप्रसङ्ग में किया है। [11]
८. लक्ष्मीस्तव-इसका वर्णन साहित्यदर्पण की लोचन टीका में प्रतिपादित है।

इस ग्रन्थ को उन्होंने १० परिच्छेदों में विभक्त किया। [12]

साहित्यदर्पण

1. प्रथम परिच्छेद-इसमें काव्यप्रयोजन, लक्षण आदि प्रस्तुत करते हुए ग्रन्थकार ने मम्मट के काव्य लक्षण "तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुन:क्वापि" का खण्डन किया है और अपने द्वारा प्रस्तुत लक्षण "वाक्यं रसात्मकं काव्यम्" को ही शुद्धतम काव्य लक्षण प्रतिपादित किया।
2. द्वितीय परिच्छेद-इसमें वाच्य और पद का लक्षण कहने के बाद शब्दशक्तियों अभिधा, लक्षणा, व्यञ्जना का विवेचन और वर्गीकरण किया गया है।
3. तृतीय परिच्छेद-इसमें रस-निष्पत्ति का विवेचन है और रस निरूपण के साथ-साथ इसी परिच्छेद में नायक-नायिका भेद भी परिलक्षित है।
4. चतुर्थ परिच्छेद-इसमें काव्य के दो भेदों ध्वनि काव्य एवं गुणीभूतव्यङ्गय काव्य आदि का विवेचन है।
5. पञ्चम परिच्छेद-इसमें ध्वनि-सिद्धान्त के विरोधी सभी मतों का तर्कपूर्ण खण्डन और इसका समर्थन है।
6. छठें परिच्छेद-इसमें नाट्यशास्त्र से सम्बन्धित विषयों को प्रतिपादित किया गया है। यह परिच्छेद इस ग्रन्थ का सबसे विस्तृत है। इसमें लगभग 300 कारिकाओं का विवेचन किया है। पूरे साहित्यदर्पण में 760 कारिकाएँ है।
7. सप्तम परिच्छेद-इसमें काव्य के दोषों को बताया गया है।
8. अष्टम परिच्छेद-इसमें काव्य के तीन गुणों का निरूपण है।
9. नवम परिच्छेद-इसमें रीतियों का वर्णन है।
10. दशम परिच्छेद-इसमें अलङ्कारों का उदाहरण सहित वर्णन है जिसमें 12 शब्दालंकार, 70 अर्थालंकार और रसवत् आदि कुल 81 अलङ्कार परिगणित है।

निष्कर्ष

सर्वप्रथम साहित्यशास्त्र के नाम पर विचार किया गया। तत्पश्चात् अलंकारशास्त्र का परिचय दिया गया। काव्यशास्त्र की परम्परा को बताया गया एवं उसके पश्चात् आचार्य विश्वनाथ का परिचय देते हुए उनकी कृतियों का संक्षिप्त वर्णन किया गया। इस शोध प्रपत्र का उद्देश्य काव्यशास्त्र की परम्परा को बताना एवं साहित्यदर्पण के विषय में बतलाना था।

सन्दर्भ

1. गुप्त, शान्तिस्वरूप. (पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धान्त), अशोक प्रकाशन, १९६०
2. चौधरी, सत्यदेव. (भारतीय काव्यशास्त्र की परम्परा), अलंकार प्रकाशन, १९७४
3. द्विवेदी, ए० पी०. (काव्यशास्त्र), भारतीय साहित्य मन्दिर, १९६६
4. द्विवेदी, हजारी प्रसाद. (नाट्यशास्त्र की भारतीय परम्परा एवं दशरूपक), दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, १९६३
5. पाण्डेय, चन्द्रशेखर. (संस्कृत साहित्य की रूपरेखा), कानपुर: साहित्य निकेतन, प्रथम संस्करण, १९४४
6. भारद्वाज, रामदत्त. (काव्यशास्त्र की रूपरेखा), सूर्यप्रकाशन, १९६७
7. विश्वनाथ,साहित्यदर्पण – (सम्पा०) काणे पी०वी०(भूमिकातथाटीकासहित) बम्बई, द्वितीयसंस्करण, १९२३
8. विश्वनाथ,साहित्यदर्पण – (सम्पा०) कौशिकदेवदत्त, वाराणसी: भारतीयविद्याप्रकाशन, १९७८
9. विश्वनाथ, साहित्यदर्पण (संपा०) (डॉ०) निरुपणविद्यालंकार, मेरठ: साहित्यभंडार, १९७७
10. विश्वनाथ, साहित्यदर्पण शशिकलाहिन्दीव्याख्या (व्या०) (डॉ०) सत्यव्रतसिंह, वाराणसी: चौखम्बाविद्याभवन, १९८२
11. विश्वनाथ, साहित्यदर्पण (वटुतोषिणीहिन्दीव्याख्या) (व्या०) अभिराजराजेन्द्रमिश्र, इलाहाबाद: अक्षयवटप्रकाशन, २००२
12. विश्वनाथ, साहित्यदर्पण (हिन्दीव्या०) शास्त्री, शालिग्राम, दिल्ली: मोतीलालबनारसीदास, १९७७
13. विश्वनाथ, काव्यप्रकाशदर्पण. (संपा०) गोपाराजु राम, इलाहाबाद: मंजु प्रकाशन, १९७२
14. श्रीवास्तव, कुमार आनन्द. (आधुनिक संस्कृत काव्यशास्त्र), दिल्ली: ईस्टर्न बुक लिंकर्स, प्रथम संस्करण, १९९०

भुजङ्गसान्धिविग्रहिकमहापात्रश्रीविश्वनाथकविराजकृतौ साहित्यदर्पणे काव्यस्वरूपनिरूपणो नाम प्रथम: परिच्छेद:। सा.द., प्र.परि. की पुष्पिका।

5 यथा मम राघवविलासे-विपिने क्व जटानिबन्धनं तव चेदं क्व मनोहरं वपु:।
अनयोर्घटना विधे:स्फुटं ननु खड्गेन शिरिषकर्त्तनम्।। सा.द.3/225 की वृत्ति

6 यथा मम कुवलयाश्वचरिते प्राकृतकाव्ये। सा.द.3/148 वृत्ति

7 यथा मम षोडशभाषामयी प्रशस्तिरत्नावली। सा.द.6/337 वृत्ति

8 प्रथमावतीर्णमदनविकारा यथा मम प्रभावतीपरिणये। सा.द.3/58 वृत्ति

9 यथा मम चन्द्रकलानाम नाटिकायां चन्द्रकलावर्णनम्। वही 3/96

10 यथा मम नृसिंहविजय-
स्फुटविकटचपेटापात्तनेनायमऽष्टौ सपदि कुलगिरीन् वा खण्डशश्चूर्णयामि।।
का.प्र.सो.टीका., पृ.1339

11 एषां च षोडशानां लक्षणाभेदानामिह दर्शितान्युदाहरणानि मम साहित्यदर्पणेऽवगन्तव्यानि।।
का.प्र.सो.टीका, पृ.322

12 प्रायेण इति वचनात् मम तातपादानां लक्ष्मीस्तवे यथा-
श्रुताधीता गीता श्रुतिभिरविगीताखिलगुणा।
गुणातीता भीताऽभयकृदविनीताऽपचयदा।
नतिप्रीता पीताम्बरसुपरिणीताऽमरवधू
दृशा पीता स्फ़ीता मलरुचिपरीता विजयताम्।। सा.द.लो., पृ.2967